च तु र्थ अ ध्या य

शिवानी की नायिकाओं की विभिन्न समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं की समस्याएँ ----

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं का स्वरूप उनकी समस्याओं को जाने बिना अधूरा ही रह जाएगा । वस्तुत: हरएक व्यक्ति का जीवन एक संघर्ष होता है । अपने जीवन में वह विविध समस्याओं का मुकाबला करता है । पुरुषों के साथ कंधे से कंधा लगाकर स्त्री भी इस जीवन संघर्ष में समान रूप से सहभागी होती है, परन्तु इसके साथ ही स्त्री-जीवन की भी अपनी कुछ अलग समस्याएँ होती है जिनका सामना केवल स्त्री को ही करना पडता है ।

समय बदलता है । समय के साथ मनुष्य का जीवन तथा उसके जीवन की समस्याओं का स्वरूप भी बदलता है परंतु अंधश्रद्धा जैसी कुछ समस्याएँ ज्यों कि त्यों बनी रहती है ।

शिवानी की कहानियों में नारी जीवन की इस प्रकार की विविध समस्याओं का चित्रण विविध कहानी नायिकाओं के माध्यम से हुआ है । वे समस्याएँ इस प्रकार है ---

१) अशिक्षा	६) प्रेम विवाह
२) निर्धनता	७) पुनर्विवाह
३) सौंदर्य	८) विवाह विच्छेद
४) कुरूपता	९) परित्यक्ता
५) अनमेल विवाह	१०) धार्मिक अंध विश्वास (रूढिवाद, परम्परावाद)

११) पारिवारिक   १२) दहेज
१३) आभूषणप्रियता ।

उपर्युक्त सभी समस्याओं का हम सुविधा के लिए निम्नलिखित पाँच वर्गों में वर्गीकरण कर सकते हैं ---

(त) अशिक्षा, धार्मिक अंधविश्वास, रूढिवाद और परम्परावाद की समस्याएँ ।
(थ) विवाह विषयक - अनमेल विवाह, प्रेमविवाह, पुनर्विवाह, अवैध संबंध और विधवाओं की समस्याएँ ।
(द) निर्धनता, आभूषणप्रियता, दहेज की समस्याएँ ।
(ध) पारिवारिक, दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ ।
(न) उच्छृंखलता तथा महत्वाकांक्षा के कारण निर्मित समस्याएँ ।
(प) कुरूपता, सौंदर्य की समस्याएँ ।

शिवानी की कहानियों में नायिकाओं की समस्याओं की चर्चा करते समय सर्वप्रथम हम पहले वर्ग में आनेवाली समस्याओं पर विचार करेंगे ।

(त) <u>अशिक्षा, धार्मिक, अंधविश्वास, रूढिवाद और परम्परावाद की समस्याएँ</u> --

शिवानी की अधिकतर कहानियाँ पहाडी परिवेश से संबंधित हैं जिस परिवेश की नारी को प्रस्तुत समस्याओं का अधिकतर मुकाबला करना पडता है ।

`जा रे एकाकी` की नायिका चनुली को ही लीजिए । नयी नवेली चनुली का फौजी पति सीमांत के चीनी युध्द से नहीं लौटता तब दिनरात उसकी सास आग उगलने लगती है, " कुलच्छनी, तूने ही मेरे बेटे खा लिया । `[१]

अपने बेटे की मृत्यु का कारण बहू को मानना और उसे `कुलच्छनी` कहना पहाड के अंधविश्वास और रूढिवाद का द्योतक है ।

---

१ जा रे एकाकी` (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं. ३३ ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

इसी तरह चनुली भी स्वयं पहाडी संस्कारों में पली हुई होने के कारण अल्मोडा के जेल लाते समय कचहरी में उसके सब गहने खुलवा लिए जाते है पर चनुली अपना चरयो (मंगलसूत्र) खोलने नहीं देती । जब उसकी पुतली उतार कर पत्थर पर रख दी जाती है तो वह पटवारी ज्यू के पैर पकड लेती है । वह लेखिका से इसी बात की पुष्टि तलब करती है, ` आप तो पहाडी हैं, जानती ही होंगी कि सोहाग कहीं पत्थर पर धरा जाता है । `[१]

एक ओर तो अशिक्षाही चनुली जैसी नायिकाओं में अंधविश्वास को पनपने में सहायका होती तो दूसरी ओर ज्येष्ठा कहानी की नायिका ब्राह्मण परिवार की होते हुए भी कर्मकाण्ड उसके विवाह में किस तरह बाधा बनकर उपस्थित होता है देखिए , ` उसी संध्या को खोटे सिक्के-सी कुंडली लौट आई तो उनका (नायिका के पिता ) माथा ठनका । देनेवालों ने तो यह कहकर लौटा दी थी कि कन्या के तीन ग्रह लडके से बडे हैं, पर अल्मोडा भर की कुंडलियों की रेखाओं का लेखा-जोखा रखने वाले भट्टजी ने कुंडली का भेद खोल दिया, ` जहाँ-जहाँ पात्र से बडा भाई होगा वहाँ-वहाँ से कुंडली ऐसे ही लौट आएगी पंतजी, कन्या का ज्येष्ठा नक्षत्र है । `[२]

` चांद ` कहानी में एक शिक्षित नायिका मानवी उर्फ मानो झाड-फूंक और जादू-टोणा इन पर विश्वास करती है । अपनी मरी हुई सौत की आत्मा ही उसे सता रही है ऐसा उसे लगता है । वह कहती है -- ` मैंने तो कभी उसके नाम का कुछ दान नहीं किया,शायद इसी से मेरे पीछे पडी है । आज ही जाकर सब सामान लाऊँगी और इसे झाडने बुलाऊँगी । `[३]

मेडिकल कॉलेज की स्टूडेंट पिरी उर्फ हरिप्रिया नास्तिक होती है । इतनी उच्च विद्याविभूषित होनेपर भी वह अपने जेठ राजेश की मृत्युकामना के लिए जाखनदेवी के मंदिर में घृत जलाती है ।

---

१ जा रे एकाकी - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं. ३९ ।

२ ज्येष्ठा (मेरी प्रिय कहानियाँ) - शिवानी - पृ.सं. ९० ।

३ चांद (अपराधिनी) शिवानी - पृ.सं. १११।

इसी तरह `मन का प्रहरी` की नायिका प्रा.अनुराधा पटेल तथा `निर्वाण` की मनोरमा चोपडा जैसी शिक्षित नायिकाएँ ढोंगी साधु और महाराजों पर विश्वास रखती हुई नजर आती हैं ।

शिवानी की कहानियों में कुछ सामाजिक कुप्रथाओंका चित्रण भी दिखाई देता है जैसे `उन दिनों पहाड में एक और भी कुप्रथा थी । समृध्द गृहों के बुजुर्ग वाणप्रस्थावस्था में, अपने यौवनकाल की इस बदनाम बस्ती ( पहाडी पेशेवर गायिकाओं का दल ) की `मिस्ट्रेस` को घर लाकर नि:संकोच गृहिणी के आसन पर बिठा देते थे । उनमें से अधिकांश सिन्थेटिक गृहिणियों का नाम `राम` के पावन अक्षर से आरंभ होता था, जैसे `रामकटोरी`, `रामप्रिया`, `राम प्यारी` आदि । जिस मुहल्ले में एक-आध ऐसी रामनाम-धारिणी वास करती,वहाँ इस चौंती गायिका-दल की बैठक विशेष रूप से जमती ।`[1]

पहाड की एक और प्रथा का उदाहरण `अभिनय` कहानी में दिखाई देता है । शेखर जीवन्ती का हाथ पकडता है तब मौसी कहती है, `तब सुन ले लडके, पहाड में किसी भी कुंआरी लडकी का हाथ,अनजान पुरुष जीवन में एक ही बार पकडता है ।`[2]

`चलोगी चन्द्रिका` में नायक चन्द्रवल्लभ नायिका चन्द्रिका से विवाह करना चाहता है जो उसकी भाभी की सगी बहन होती है । एक बार उसकी भाभी उसे लताड भी देती है, `सुनो जी चन्द्रलल्ला, तुम्हारी नीयत तो हमें ठीक नहीं लग रही है, पर पहाड में दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों में नहीं होता, जानते हो ना ?`[3]

प्रस्तुत कहानी में भी पहाडी प्रथा का जिक्र किया गया है । इस तरह `जारे एकाकी`, `ज्येष्ठा`, `चांद`, `मन का प्रहरी` `अभिनय` तथा `चलोगी चन्द्रिका` आदि कहानियों में अशिक्षा धार्मिक अंध विश्वास तथा रूढिवाद और

---

१ अलख माई (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.८८।

२ अभिनय (रतिविलाप) - शिवानी - पृ.सं.७६ ।

३ चलोगी चन्द्रिका (गैंडा) शिवानी - पृ.सं.७९ ।

परम्परावाद की समस्याओं का चित्रण हुआ है ।

(थ) विवाह विघायक समस्याएँ --

` अनमेल विवाह, प्रेमविवाह,पुनर्विवाह,अवैध संबंध ,विवाह विच्छेद और विधवाओं की समस्याएँ ।

` विवाह` एक पवित्र सामाजिक बन्धन होता है । दो शरीरों का ही नहीं अपितु दो मनों का मिलन होता है । जिस विवाह से यह हेतु सफल नहीं होता वह विवाह अनेक समस्याओं को जन्म देता है । अनमेल विवाह, इसका एक प्रमुख कारण है । अत: हम सर्वप्रथम अनमेल विवाह के कारण निर्मित समस्याओं पर विचार करेंगे ।

(१) अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न समस्याएँ --

वयस की असमानता अनमेल विवाह का उदाहरण किस तरह बनती है :- ` छि: मम्मी तुम गंदी हो` कहानी में देख सकते है । प्रस्तुत कहानी की नायिका जानकी की उम्र सोलह वर्ष की है और उसका पति अडतालीस वर्ष का है । तिगुनी उम्र का पति, ` अपनी भोली नवेली के लिए आकाश के चाँद सितारे तोड लाने के लिए व्याकुल हो उठा । कौन से ऐसे मिष्ठान थे,जो अपने शहर से ला लाकर उसे नहीं चखा दिए, किसी भी रेशमी जोडे के लिए वह मुंह भर खोलती कि प्रौढ पति के प्रेम का जादुई अलादिनी चिराग चटसे उसके करतल पर धर देता । `[१]

परंतु उसका मन स्वयं उसे आशंकित करने लगता है कि कहीं जानकी किसी और की तरफ आकृष्ट न हो । जानकी का किसी के साथ हँसना, बोलना भी उसे अच्छा नहीं लगता । वह अपनी पत्नी को पडोस के एक युवा लडके के बारे में डाँटता है, ` मैं तुम्हें लाख बार समझा चुका हूँ कि उस हरामजादे को घर में मत घुसने दो, फिर भी तुम नहीं मानती । लगता है, तुम्हारे सिर पर मौत नाच रही है । `[२]

---

१ छि: मम्मी, तुम गंदी हो - (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४८ ।

२ - वही - पृ.सं.४९ ।

दोनों में इसी बात को लेकर कलह होने लगता है, अंत में जानकी अपने प्रेमी की मदद से अपने पति का खून कर देती है ।

अनमेल विवाह का और एक उदाहरण शिवानी की 'चांद' कहानी में दिखाई देता है ।

अनमेल विवाह से तात्पर्य सिर्फ उम्र का अनमेल नहीं, अपितु एक दूसरे का स्वभाव भी जब मेल नहीं खाता तब भी वह अनमेल विवाह बन जाता है और उससे उत्पन्न समस्याएँ अनमेल विवाह की समस्याएँ कहलायी जाती हैं । प्रस्तुत कहानी में भी ऐसा ही हुआ है । जिस व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व पर वह रीझ जाती है वही धीरे धीरे उसके लिए किस तरह अभिशाप बन बैठता है देखिए ---

'मानवी को शोख रंगों में लगाव था, और जे.के.लाल रंग देखते ही सांड-सा भड़क उठता, मानवी को तला-भुना, मिर्च-मसालेदार खाना रुचता था, जे.के.... अब केवल मूंग की दाल और उबली लौकी खाता था । कभी कोई जल्सा होता तो मानवी बडा-सा जूडा बनाकर बेले का गजरा लगा लेती और फौरन ही जे.के. तुरुप लगा देता - 'क्यों कोठे में बैठने जा रही हो क्या ?'[१]

इस अनमेल विवाह का प्रमुख कारण उन दोनों का अलग अलग स्वभाव और उनका अलग अलग रहन सहन । इसके बारे में लेखिका का कथन चिंतनीय है - 'मानवी शुक्ला और जे.के. के स्वभाव में ही नहीं, दोनों के पितृकुल के रहन-सहन ,अदब-कायदों में भी कोई साम्य नहीं था । एक का स्वभाव उत्तर था तो दूसरे का दक्षिण ।'[२]

इस तरह मानवी और जे.के. का यह अनमेल विवाह सफल नहीं होता, बल्कि विवाह-विच्छेद के परिणाम में परिणत होता है ।

'ज्यूडिथ से जयन्ती' की रमा और 'मन का प्रहरी' की प्रा. अनुराधा पटेल को भी अनमेल विवाह की समस्या का परिणाम भुगतना पडता है ।

---

१ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१०६ ।

२ - वही - शिवानी - पृ.सं.१०५ ।

(२) प्रेम-विवाह की समस्याएँ --

परिचय का रूपान्तर प्रेम में और प्रेम का रूपान्तर विवाह में हो जाना स्वाभाविक है, फिर भी कतिपय प्रेम-विवाह असफल होते हुए ही दिखाई देते है। इसके कई कारण हो सकते हैं। शिवानी की कहानियों में `जा रे एकाकी`, `चांद`, `प्रतीक्षा` तथा `मौसी` कहानी की क्रमश: चनुली, मानवी, माधवी तथा तिला इन नायिकाओं को प्रेम विवाह के कारण उत्पन्न समस्याओं का मुकाबला करना पडता है। जैसे --

`जा रे एकाकी` में, `अपने सीढी - से बने खेत पर खडे उस बाँके कुमाऊनी जवान ने सुन्दरी चनुली को बकरियाँ चराते देखा था। निर्णय लेने में उसने फिर विलंब नहीं किया। किन्तु पुत्र जब जननी को पुत्रवधू-चयन के जन्मजात अधिकार से वंचित करने की धृष्टता करता है, तो कभी पढी-लिखी जननी का चित भी विद्रोह कर उठता है, फिर वह तो अपढ ग्राम्या मां थी। विवश होकर बहू तो ले आई, किन्तु उसे स्वीकार नहीं कर पाई। आए दिन गृह-कलह की आतिशबाजी से ग्राम का आकाश रंगीन बनने लगा और आनंद उठाने के लिए प्रतिवेशी परिवारों की भीड जुटने लगी[१]।`

`चांद` की नायिका मानवी भी अपने पिता की इच्छा के विरुध्द जे.के. से प्रेमविवाह करती है परंतु इस प्रेमविवाह की फलश्रुति भी शून्य निकलती है।

`प्रतीक्षा` की माधवी के सौंदर्य से पागल होकर विमल जोशी उससे प्रेम-विवाह तो करता है, यह मालूम होते हुए भी कि उसे (माधवी को) पागलपन के दौरे पडते हैं। परंतु जब तक ऐसा कोई दौरा उस पर नहीं पडता, वह उसके बिना एक पल भी अलग नहीं रहना चाहता है। परंतु जब पहली बार वह उसके पागलपन के दौरे का अनुभव करता है, वह उसे बरेली के पागलखाने में छोडकर वापस आता है।

`के` कहानी की `के` और `मन का प्रहरी` की प्रा. अनुराधा पटेल को भी इसी समस्या से मुकाबला करना पडता है इन दो कहानियों में भी असफल प्रेम विवाह का चित्रण हुआ है।

---

१ जा रे एकाकी (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं. ३३ ।

प्रेम विवाह की समस्याओं के अन्तर्गत ही हम आंतरजातीय, आंतरधर्मीय और आंतरप्रांतीय विवाहों से उत्पन्न समस्याओं को रख सकते हैं । इस प्रकार की समस्याओं का चित्रण, अनाथ तथा मौसी इन कहानियों की नायिकाओं के माध्यम से हुआ है । इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है ---

`अनाथ` कहानी में ऐनी और बनर्जी का आंतरधर्मीय आंतरप्रांतीय विवाह हो जाता है । ऐनी की माँ नेपाली और पिता आइरिश । लोग उसे कुमाऊँनी मानते होंगे , बनर्जी बंगाली हिन्दू ।

पूरा मुक्तेश्वर बनर्जी के विवाह का विरोध कर उठता है, `कुमाऊँ की कन्या को किस दुसाहस से वह ब्याह ले जाएगा, वे देख लेंगे ।

परंतु इस विवाह की वार्ता जब बनर्जी के पिता तक पहुँचती है तो वह बंगाल से आकर चील की तरह झपटकर अपने बेटे को उठाकर ले जाता है । ऐनी फिर अकेली रह जाती है । पडोसी के नाते लेखिका ने एक बार उसे समझाया भी था, `ऐसा न हो कि बाद में पछताना पडे । सोच लो बनर्जी ।` इस पर उसने कहा था, `सोचेगा आवार क्या ।` `हम सब सोच लिया ।ऐनी हमारा गिन्नी बनेगा ।`[२]

इस तरह के विवाह में ऐसा ही होता है । जोश में आकर ब्याह तो किया जाता है पर सच्चाई का सामना करना कठिन हो जाता है ।

(३) <u>पुनर्विवाह की समस्याएँ</u> --

शिवानी की कहानियों में पुनिर्विवाह के उदाहरण भी दृष्टिगोचर होते हैं तथा पुनर्विवाह के कारण निर्माण विभिन्न समस्याओं से भी हम अवगत होते हैं । ज्यादातर रूप से पुरुषों के पुनर्विवाह ही आपकी कहानियों में दिखाई देते हैं ।

---

१ अनाथ (कैंजा) शिवानी - पृ.सं.१३५ ।

२ अनाथ (कैंजा) शिवानी - पृ.सं.१३६ ।

`चाँद` कहानी की मानवी जानबूझकर एक प्रौढ दुहेजु से विवाह करती है। इस पुनर्विवाह से अर्थात् मानवी के पति जे.के.के पुनर्विवाह से न तो जे.के. स्वयं खुश है न मानवी। प्रस्तुत पुनर्विवाह से उत्पन्न समस्या `विवाह-विच्छेद` के एकमात्र उपाय से हल हो पाती है।

`ज्यूडिथ से जयन्ती` की नायिका रमा के पिता के देहान्त के उपरान्त उसके घर की आर्थिक स्थिति बदतर हो जाती है, जिसके कारण उसके मामा-मामी उसका विवाह एक दुहेजु से कराते हैं। उसके पति का यह उससे पुनर्विवाह उसके लिए अधिकतर दु:खदायक ही साबित होता है। रमा का पति हमेशा अपनी पहली पत्नी की स्मृति में ही डूबा रहता है।

(४) अवैध मातृत्व और भ्रूण हत्या की समस्याएँ --

`अनाथ` कहानी की नायिका ऐनी को अवैध मातृत्व प्राप्त होता है। वस्तुत: उसका विवाह बनर्जी से हो जाता है फिर भी उसकी संतान अवैध बन जाती है क्योंकि विवाह के उपरान्त कुछ ही दिनों में बनर्जी को उसके पिता बंगाल वापस ले जाते हैं। अत: अपने बेटे को ऐनी `अनाथालय` में रख देती है।

`भीलनी` की नायिका विलासिनी अपने जीजाजी के प्रेम में फँस जाती है। समाज की दृष्टि से यह व्यभिचार हो जाता है। इस संबंध से उसे एक लडकी होती है। इस तरह उसके सम्मुख अवैध मातृत्व की समस्या निर्माण हो जाती है जिसके कारण वह देश छोडकर काबूल जाना पसन्द करती है।

`भ्रूण हत्या` की समस्या का चित्रण `अलख माई` की नायिका रजुला के माध्यम से किया गया है। रजुला का गाँव के एक पूज्यनीय व्यक्ति से अवैध संबंध होता है। उसकी प्रतिष्ठा पर वह आँच नहीं आने देती। वह अपने नवजात शिशु की हत्या कर देती है वह कहती है --` नदी में ले गई, अपनी आँखें बन्द कर मैंने दुश्मन को डूबो दिया ... पूरा गाँव उसके बाप को देवता मानकर पूजता था और

फिर उसका बाप क्या मेरा पति था ? मैं तो नाचने-गानेवाली नरेण की (प्रभु की) दासी ,घोर पापिन कलमुँही रजुला क्या अपनी कालिख उनके मुँह पर पोंछ सकती थी ?` [1]

(५) विवाह-विच्छेद की समस्या

दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास खत्म होता है और आये दिन कलह बढता ही जाता है, विवाह एक बन्धन लगने लगता है तब उसके विच्छेद की आवश्यकता आ पडती है ।

`चांद` कहानी में मानवी का पति जे.के.मानवी के साथ विश्वासघात करता है । मानवी के मैके जाने के बाद घर की नौकरानी चांद मानवी के शयनकक्ष पर काबू करती है । लौटकर मानवी को जब इस बात का पता चलता है तब विवाह-विच्छेद के सिवाय उसके सम्मुख कोई दूसरा उपाय ही नहीं रह जाता । लेखिका जब मानवी से कहती है -` आज रात को सोच लो मानो, जीवन भर का रिश्ता ऐसे नहीं तोडा जाता...` तब वह कहती है ...` मैंने नहीं तोडा बहन,वह तो विधाता ने तोड दिया है । मुझे मत रोको । गाडी तो सुबह पांच बजे जाती है, पर तीस फ्लैटों की आँखें सुबह मुझे घूरें, चीरें,फाडें यह साहस नहीं है मुझमें ।` [२]

(६) विधवाओं की समस्याएँ --

रमा`दी के असमय वैधव्य को देखकर लेखिका कहती हैं, मुझे हमेशा यही लगता है कि रमा`दी के साथ विधाता ने जन्म से मृत्यु तक केवल अन्याय ही किया है ।` [३] भरी जवानी में उन्हें वैधव्यने श्रीहीन ही नहीं किया, दीन-हीन भी बना दिया अबोध पुत्र को लेकर वह कहाँ जा सकती थी ? न सास न ससुर, न कोई आत्मीय, जो थे उन्होंने औपचारिक सान्त्वना के अतिरिक्त उन्हें किसी भी प्रकार के संरक्षण के लिए आश्वस्त नहीं किया ।[४]

---

१ अलख माई (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.५४ ।
२ चांद (अपराधिनी) शिवानी - पृ.सं.१३० ।
३ ज्यूडिथ से जयन्ती (कैंजा) शिवानी - पृ.सं.६९ ।
४ - वही - शिवानी - पृ.सं.७० ।

विधवा नारी के लिए कितनी विपत्तियों का सामना करना पडता है रमा दी के चरित्र से स्पष्ट होता है । अन्ततोगत्वा, वह एक स्कूल में अध्यापिका का काम करने लगती है । पुत्र को बडा इन्जीनियर बनाती है । परंतु पुत्र विदेशी बहू का गुलाम बन जाता है । इस तरह एक विधवा की अपने परिवार के लिए की गई तपस्या विफल हो जाती है ।

'ज्यूडिथ से जयन्ती' की रमा, 'शायद' की कुसुम तथा बीलगाडी की नायिका विधवा होते हुए भी हिम्मत से काम लेती हुई नजर आती है । जैसे ....

'कुसुम विधवा थी, पर अपने वैधव्य के कृष्ण-मेघ की छाया से उसने अपने जीवन-काश को म्लान नहीं होने दिया था । अधूरी शिक्षा पूर्ण कर वह केवल अपनी योग्यता की बैसाखियाँ टेकती, अब शिक्षा विभाग के एक ऊँचे पद पर पहुँच चुकी थी ।'[1]

इस तरह लेखिका न केवल विधवाओं की समस्याओं का चित्रण करने में सफल हुई है अपितु उनके समाधान प्रस्तुत करने में भी सफल रही है । साथ ही साथ यहाँ हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि इनकी नायिकाओं ने परिस्थिति के सामने घुटने नहीं टेक दिए हैं बल्कि परिस्थिति को चुनौति मानकर उनको स्वीकार किया है ।

इस तरह विवाह विघायक विविध समस्याओं का पर्याप्त चित्रण शिवानी की कहानियों में नायिकाओं के माध्यम से हुआ है ।

---

१ शायद (कृष्णावेणी) - शिवानी - पृ.सं.१२९-३० ।

द) निर्धनता, आभूषण प्रियता, दहेज की समस्याएँ --

(१) निर्धनता की समस्याएँ-

पहाडी परिवेश की कहानियाँ होने के कारण पहाड के लोगों की निर्धनता से निर्माण समस्याओं का चित्रण शिवानी की कहानियों में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है ।

पहाडी प्रदेश में अर्थार्जन के साधनों का अभाव वहाँ के लोगों की निर्धनता का प्रमुख कारण है । निर्धनता और अशिक्षा रूढि-परम्परावाद और अंधविश्वास दोनों के पनपने में सहायभूत होते हैं । इसीलिए दहेज जैसी समस्या का समाधान करना निर्धनता के कारण असम्भवसा होता है । अत: सुन्दर लडकियाँ कम उम्र में ही साठ-साल के मालवाले (धनी) बूढों को समर्पित की जाती है । जिसके परिणाम स्वरूप असमय वैधव्य तथा अवैध संबंध जैसी समस्याएँ भी निर्माण होती हैं ।

' पिटी हुई गोट ' में तरेसठ साल के गुरुदास को अठारह साल की चंदो रुपयों के बल पर ही मिलती है ' तीन वर्ष पहले उसके दरिद्र माता-पिता पिठौरागढ के अग्निकाण्ड में भस्म हो गए थे । कभी उसने चावल चखे भी नहीं थे ।... उसका दरिद्र परिवार नष्ट हुआ, तो बिरादरीवाले उस अनाथ सरल बालिका को नैनीताल के एक दूर के रिश्ते के ताऊ के मत्थे पटक गए । प्राय: ही वह गुरुदास की दूकान पर सब्जी लेने जाती । कद्दू, मूली और पहाडी बण्डे के बीच खडी उस रूप की रानी पर साहजी बुरी तरह रीझ गए और एक दिन अन्धे के हाथ बटेर लग गई । साठ वर्ष के साह ने सेहरा बाँधा ।'[१]

चंदो को गुरुदास के प्रति लगाव क्यों था ? देखिए, ' उसे सचमुच ही पति के प्रति अनोखा लगाव था । उस लगाव में प्रेम कम, कृतज्ञता ही अधिक थी ।... गुरुदास उसे बडे ही प्यार से पुचकारकर बुलाथा, बडे से दोने में भरकर जलेबी लाने में वह कभी कंजूसी नहीं दिखाता था और जिसे जीवन के पन्द्रह वर्षों में मिठाई तो

---

१ पिटी हुई गोट - (कृष्णावेणी) - शिवानी - पृ.सं.६१ ।

दूर, भरपेट अन्न भी न जुटा हो, उसके लिए नित्य जलेबी का दोना पकड़ने वाला पति परमेश्वर नहीं तो और क्या होता ।`[1]

`चलोगी चन्द्रिका` में चन्द्रिका के पिता आर्थिक उपकार के बोझ के कारण उसका विवाह चन्द्रवल्लभ से न कराकर सदानंद से कराते हैं ।

`दण्ड` की नायिका संथालकन्या चांदमनी से विवाह पूर्व संबंध स्थापित करके जब वह गर्भवती हो जाती है तो उसके गरीब पिता को बहुत-सा धन देकर डॉ. सिंह अपनी जिम्मेदारी टाल देता है ।

(२) दहेज समस्या --

दहेज समस्या पर आधारित `श्राप` कहानी में नायिका दिव्या की जो शोकान्तिका होती है उसे पढ़कर वर्तमान सामाजिक जीवन के कटु-सत्य के दर्शन हुए बिना नहीं रहते ।

दिव्या के पिताजी इस समस्या से कितने हताश हुए हैं देखिए `आपतो जानती हैं, हम लोगों में अच्छे लड़के के लिए अच्छी खासी रकम देनी पड़ती है ।दुर्भाग्य से हम कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं, हमारे यहाँ एक प्रकार से रेट बँधे हैं, आई.ए.एस.लड़का है तो सवा लाख,आई.पी.एस.तो एक लाख, इंजीनियर तो अस्सी हजार और फिर साधारण नौकरी वाले के लिए भी कम-से-कम बीस हजार,उस पर दहेज अलग,डॉक्टर लड़के तो कंधे पर हाथ नहीं धरने देते ।`[2]

विवाह का एक दिन रह गया था .. करीने से सजे विभिन्न उपकरणों को लेखिका देखती ही रह गई । `कौन-सी ऐसी वस्तु थी जो बेचारे निरीह पिता ने नहीं जुटाई थी । साड़ियों का स्तूप,टेलीविजन, फ्रिज,इस्तरी,बर्तन, रेशमी रजाइयाँ, लट्ठे-मलमल के थान,गैस का चूल्हा, सिलिण्डर ,बिजली के पंखे आदि ।`[3]

---

१ पिटी हुई गोट (कृष्णावेणी) - शिवानी - पृ.सं.८३ ।

२ श्राप (पूतोंवाली) शिवानी - पृ.सं.९० ।

३ श्राप (पूतोंवाली) शिवानी - पृ.सं.९३ ।

बस, द्वाराचार में कुछ कमी रह जाती है । विवाह के चार महीने उपरान्त दिव्या के जलकर मरने का समाचार मिलता है । अपनी सोने की छडी सी बेटी जलकर कोयला बनी देखकर माँ उसे पूछने लगती है ` बेटी कैसे हुआ यह ?` बोली ..` अम्मा हुआ नहीं, किया गया` बस ,आँखें पलट दीं ।` १

(३) आभूषण प्रियता की समस्या --

आभूषण,अलंकार तथा गहने स्त्री की कमजोरी होती है । परन्तु यही आभूषण प्रियता स्त्री के लिए समस्या भी बन सकती है । इस बात को लेखिका ने ` साधो ई मुर्दन के गाँव` की वह और मग्गी,` सती` की मदालसा सिंघाडिया और ` अपराधी कौन` की अम्ला और मीना के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

` साधो ई मुर्दन के गाँव` की ` वह` एक ऐसे ही डकैत की प्रियतमा है जिसके आंतक ने सैकडों गाँवों को थर्रा दिया था ।` वह` दस्यु दल की पटरानी बनती है और नित्यनवीन आभूषणों से जगमगाती रहती है । उसकी गहनों की हवस के कारण ही दोनों पति-पत्नी पकडे जाते हैं । दोनों को सजा होती है ।इस कहानी में डकैत की प्रेरणा 'स्त्री की गहनों की लालसा'को दर्शाया गया है ।

` अपराधी कौन` कहानी में मीना और अम्ला दोनों अपने ही घर में एक सोने की करधनी के लिए चोरी करती हुई नजर आती है । अम्ला मीना की पूर्वाश्रम की सहेली है और अब की भाभी । परंतु इतनी घनिष्टता तथा रिश्ते के बावजूद भी एक दूसरी की दुश्मन बन जाती है । पहले इस करधनी को अम्ला अपनी सास से चुराती है फिर मीना अम्ला से अंत में मीना के अन्य गहनों के साथ अम्ला फिर एक बार वह सोने की करधनी चुराती है ।

इस तरह आभूषण प्रियता स्त्री को किस मुश्किल में डाल देती है इसका परिचय हमें मिलता है ।

---

१ श्राप (पुतोंवाली) शिवानी - पृ.सं.१७ ।

(घ) पारिवारिक,दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ

` वैसे तो प्रत्येक सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए कलह का अस्तित्व भी एक प्रकार से अनिवार्य है । जीवन-भर आकण्ठ प्रेम में डूबे दम्पति कभी वैवाहिक जीवन के सच्चे सुख को नहीं जान सकते । एक न एक दिन उनके इस प्रेम-प्रदर्शन में बनावटी अभिनय का पुट स्वयं ही आ जाता है । जीवनभर कबूतरों की भाँति चोंच में चोंच दिए गुटरगूं करना भी भला कोई जीवन है । '[१]

प्रस्तुत विचार लेखिकाने कहानी के ` नरेटर ' के रूप में व्यक्त किए हैं जिनसे हर कोई सहमत हो सकता है । ` दाम्पत्य-जीवन ' से तात्पर्य है पति-पत्नी से संबंधित जीवन और पारिवारिक जीवन से तात्पर्य पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन इन सब का सम्मिलित जीवन । अत: हम सर्व प्रथम दाम्पत्य जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का उद्घाटन करेंगे ।

(१) दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ --

दाम्पत्य जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित शिवानी की कहानियाँ हैं - बन्द घडी, छि: मम्मी तुम गंदी हो, चांद, ज्यूडिथ से जयन्ती, प्रतीक्षा, पिटी हुई गोट, के.प्रतिशोध, भीलनी , अपराजिता, निर्वाण तथा सौत ।

बन्द घडी में माया और गिरीश दोनों पति-पत्नी के स्वभाव एक दूसरे से मिलते नहीं हैं -- ` माया थी भावुक । गिरीश को भावुकता से चिढ थी । माया को शोख रंग की साडियाँ पसंद थीं । कभी-कभी लिपस्टिक भी लगा लेती तो गिरीश कहता, ` चूहा मारकर खून लगा लो न ओठों पर, और अच्छी लगोगी । '

इस तरह के रोजमर्रा के कलह से तंग आकर माया एक दिन आत्महत्या करने की सोचती है, परंतु संयोगवश बन्द घडी के कारण उसकी आत्महत्या नहीं हो पाती और बाद में उसका दाम्पत्य जीवन भी सुधर जाता है । इसमें स्त्री को थोडी

---

१ चांद (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.१०५ ।

सहनशीलता की आवश्यकता होती है वरना दाम्पत्य जीवन ही नहीं अपितु पूरा पारिवारिक जीवन खतरे में पड सकता है जैसा कि ` छि: मम्मी तुम गंदी हो ` की जानकी के बारे में हो जाता है ।

जानकी का पति जानकी पर जान लुटाता है परंतु है तो वह शक्की स्वभाव का । इसका कारण भी स्पष्ट है कि उसकी उम्र जानकी की उम्र से तिगुनी है । अत: देवर-भाभी की निष्कपट ठिठोली भी उसे सिर से पैर तक झुलसा देती है । इसका परिणाम ` धीरे धीरे ईर्ष्यालु पति के शक्की स्वभाव ने प्रेम की जड को कुतरना आरम्भ कर दिया । दिन-रात के कलह ने गृह को श्रीहीन कर दिया । `[१]

दोनों का दाम्पत्य-जीवन कभी सुखी नहीं हो पाता है । झगडने की दोनों को आदत-सी हो जाती है । जानकी के प्रेमी को लेकर दोनों में और अधिक झगडा शुरु हो जाता है ।

` ज्यूडिथ से जयन्ती ` की नायिका रमा दी का विवाह तीस वर्ष के दुहेजू से हो जाता है । वह अभी तक अपनी मृत पत्नी की स्मृति को भूल नही पाता है । रमा दी के दाम्पत्य जीवन का आरम्भ किस प्रकार होता है देखिए -- ` जिस व्यक्ति से उनका विवाह हुआ, उसने विवशता से ही उनसे विवाह किया है, यह वह पहले ही दिन जान गई । परिचय की जिस प्रथम रात्रि के उन्होंने कभी मीठे सपने देखे थे, वह देखते ही देखते पति की सिसकियों में कट गई । रात-भर वह अपनी पहली पत्नी के प्रति किए गए, अपने विश्वासघात के पश्चाताप में ही सिसकता रहा । `[२]

` प्रतीक्षा ` कहानी की नायिका माधवी का दाम्पत्य जीवन उसकी मानसिक बीमारी के कारण खतरे में पड जाता है । पहले तो उसका प्रेमी विमल जोशी माधवी की इस बीमारी को जानकर भी उसका स्वीकार करता है, परंतु जब सच्चाई का सामना करने की बारी आ जाती है तो वह उससे मुँह फेर लेता है । इस तरह दाम्पत्य जीवन में बीमारी भी बाधा बनकर किस तरह आती है और स्वार्थी पुरुष अपनी जिम्मेदारी

---

१ छि: मम्मी तुम गंदी हो (अपराधिनी) - शिवानी - पृ.सं.४८ ।

२ ज्यूडिथ से जयन्ती (कैंजा) शिवानी - पृ.सं.६७ ।

किस तरह टालता है वह इसमें दर्शाया गया है ।

'भीलनी' की नायिका सुहासिनी का दाम्पत्य जीवन उसकी सुंदर कुमारिका बहन विलासिनी की वजह से समाप्त हो जाता है । अपने पति के साथ अपनी बहन के प्रेम संबंध का पता चलते ही सुहासिनी रिवाल्वर से अपनी सौत बनी बहन को निशाना बनाना चाहती है पर गोली उसके पति को लग जाती है तब दूसरी गोली से वह स्वयं आत्महत्या कर लेती है । इस तरह सुहासिनी के दाम्पत्य जीवन का अन्त हो जाता है ।

'मन का प्रहरी' की नायिका प्रा.अनुराधा पटेल का दाम्पत्य जीवन वयस की असमानता के कारण किस तरह असफल हो जाता है, स्वयं उसी के शब्दों मे देखिए । पैंतालीस वर्षा की प्रा.अनुराधा पटेल अपने इक्कीस वर्षीय पति प्रियतम महंती का साथ विवाह के बाद एक वर्षा में ही छोड देती है । जाते समय वह उसके लिए एक चिट्ठी छोडती है --"हम दोनों ने बहुत बडी भूल की थी, प्रियतम । संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की इस दूरी को पार नहीं सकती । तुम्हारे लडकपन को मेरे प्रौढ अनुभव का धैर्य कभी नहीं जीत पाया । जैसे अत्याधुनिक शल्यक्रिया में किए गए हृदयारोपण के अनेक प्रयास आज तक असफल ही रहे हैं,एक न एक दिन प्रकृति नवीन अंग को रिजेक्ट कर देती है,ऐसे ही तुम्हारे प्रेम को भी मेरा शरीर जिस झटके से दूर पटक चुका है, उसके बाद अब मैं नवीन प्रयोगों में समय,शक्ति और अपना धन गंवाना महामूर्खता समझाती हूं ।"[१]

इस तरह, पिटी हुई गोट , के.प्रतिशोध, अपराजिता,निर्वाण तथा सौत कहानियों में दाम्पत्य जीवन की विविध समस्याओं का सामना करती हुई नायिकाओं के दर्शन हो जाते हैं ।

---

१ मन का प्रहरी (गैंडा) - शिवानी - पृ.सं.१३२ ।

(२) पारिवारिक समस्याएँ --

पारिवारिक समस्याएँ परिवार से सम्बन्धित अनेकानेक कारणों से संबध्द होती हैं विशेषत: ये पारिवारिक समस्याएँ पति-पत्नी के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों के कारण निर्माण होती हैं ।

शिवानी की कहानियों में - जा रे एकाकी, अलख माई, ज्यूडिथ से जयन्ती, भिक्षुणी, बन्द घडी तथा लाटी की नायिकाओं को पारिवारिक समस्याओं का किस तरह मुकाबला करना पडता हैं अब हम देखेंगे ।

`जा रे एकाकी` में चनुली का फौजी पति चनुली से विवाह तो करता है परंतु यह विवाह चनुली की सास की इच्छा के विरुध्द किया गया विवाह होता हैं । अत: जब चनुली का सीमान्त युध्द से जब लौटता नहीं तब चनुली को अपनी सास की जली कटी सुननी पडती हैं ।

`अलख माई` की लछमी अपनी सास के अत्याचार को सहन नहीं कर पाती । वह अपनी सास और पति दोनों की हत्या कर डालती हैं ।

`ज्यूडिथ से जयन्ती` की रमा दी मैंसे में अपने पिता और माई की चिंता में असमय प्रौढ बन जाती हैं । पति के घर अपने दुहेजू पति से सुख की दो बातें भी सुनना उसके नसीब नहीं होता कि उस अभागी का पति बीच राह में स्वर्गवासी हो जाता हैं । पुत्र को इंजीनियर वह बनाती है, परंतु आगे चलकर` वह भी विदेशी बहू का दास बन जाता हैं ।

इस तरह रमा दी का जीवन आरम्भ से अन्ततक पारिवारिक समस्याओं से लडते-झगडते ही गुजर जाता है ।

पारिवारिक समस्या कितना भीषण रुप धारण कर सकती हैं यह हम `भिक्षुणी` कहानी में देख सकते हैं । कहानी की नायिका किक्की अपनी गृहस्थी में ननद की हुकूमत को बरदाश्त नहीं कर पाती और सुखी गृहस्थी पर लात मार कर

पूर्वाश्रम के प्रेमी के साथ भाग जाती है ।

'बन्द घडी' में दाम्पत्य जीवन की समस्या सिर्फ दाम्पत्य तक सीमित नहीं रह जाती, सारा परिवार इस आग की चपेट में आ जाता है । गिरीश दूर-दराज की 'टूर' से जब लौटता है तब न केवल माया से झगडता है अपने बेटे पर आग बरसाता है । उसका बेटा गाना गाता हुआ घर में आता है और गिरीश को देखता है तो चुप हो जाता है, पर गिरीश उसे भी डाँटता है - 'बाप साला हड्डियाँ तोडकर पैसा कमाता है कि लाडले की यही हिट सुनें ।'[१]

इससे ममी और पापा के झगडे में बच्चों की सहानुभूति ममी के साथ रहती । तो इससे गिरीश और अधिक अत्याचारों की झडी लगा देता । उधर क्रोध और झुंझलाहट से भरी माया चौके से ही चिमटे और संडसी का तलतरंग बजाकर प्रत्युत्तर देती ।'[२]

पारिवारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए ठंडे दिमाग की आवश्यकता होती है । जल्दी में माया आत्महत्या कर सकती थी परंतु बन्द घडी के कारण उसका वह बुरा समय टल जाता है और इसी अवधि में उसे अपने पति गिरीश का बदला हुआ दूसरा रूप दिखाई देता है तो वह खुश होती है और गृहस्थी में सफल बन जाती है ।

(न) कुरूपता, सौन्दर्य की समस्याएँ ---

'स्त्री' का कुरूप होना और अधिक सुन्दर होना भी स्त्री के लिए समस्या का कारण बन सकता है ।

'अलख माई' की लछमी, 'मीलनी' की सुहासिनी दोनों को कुरूपता के कारण अपनी गृहस्थी में असफल बनना पडता है । तो 'पिटी हुई गोट' की

---

१ बन्द घडी (कैंजा) शिवानी - पृ.सं.१९३ ।

२ - वही - पृ.सं.१९५ ।

नायिका चन्दो के लिए सुन्दरता शाप सिद्ध होती है ।

चन्दो अत्यंत सुन्दर है । उसकी उम्र अठारह वर्ष की है तो उसका पति तितरेसठ वर्ष का है । वह इतनी सुंदर है.... `मन्दिर के रास्ते में उसे प्राय: ही डिगरी कॉलेज के मनचले लड़के `वैजयन्तीमाला` कहकर छेड भी देते, पर उनके फिल्मी गाने, सीटियाँ और हाय-हूय उसे छू भी नही सकते ।`

परंतु गांव का कुख्यात जुआरी महिम भट्ट उसे प्राप्त करके ही रहता है । वह चंदो के पति गुरुदास को जुआ खेलने के लिए निमंत्रित करता है । उसकी दुकान और आठ हजार रुपयों को ही नही वह उसकी पत्नी चंदो को भी दाव पर लगाने के मजबूर करता है और गुरुदास एक एक करके सब हार जाता है ।

अपने सौंदर्य का नाजायज फायदा उठानेवाली नायिकाएँ भी हमें दिखाई देती है । `चांद` की नायिका चांद अपने पीछे सभी पुरुषों को दीवाना बनाने में ही खुशी प्राप्त करती है ।

`भीलनी` में विलासिनी के सौंदर्य पर रीझकर उसकी बहन सुहासिनी का पति अपने प्रेम जाल में खींच लेता है जिसके परिणामस्वरूप सुहासिनी का सुखी गृहस्थी जीवन ध्वस्त हो जाता है ।

(प) प्रौढ कुमारिकाओं की समस्या --

शिक्षा का प्रसार, कुरुपता, निर्धनता, महत्वाकांक्षा । दहेज आदि अनेकानेक कारणों से प्रौढ कुमारिकाओं के विवाह की समस्या दिन-ब-दिन जटिल बनती जा रही है ।

शिवानी की निम्नलिखित कहानियों की नायिकाएँ इस समस्या से संबंधित है ...

'भीलनी' कहानी में छोटी बहन सुन्दर है परन्तु बड़ी बहन दिखने में साधारण है। जब तक बड़ी बहन का विवाह नहीं हो पाता तब तक छोटी बहन विलासिनी का विवाह असम्भव सा हो जाता है। प्रस्तुत कहानी में प्रौढ कुमारिका विलासिनी अपने जीजाजी के प्रेम में फँस जाती है।

'मन का प्रहरी' की प्रा.अनुराधा पटेल पैंतालीस वर्ष तक विवाह नहीं कर पाती। अन्तत: अपने इक्कीस वर्षीय छात्र प्रियतम महंती से विवाह करती है परंतु वह दाम्पत्य जीवन में सफल नही हो पाती।

'के' कहानी में डॉक्टर कमला अपने आश्रम में पढाई कर रहे युवा शेखर से विवाह करती है परंतु शेखर को किशोरी की ओर आकर्षित होते देखकर वह किशोरी की हत्या कर डालती है।

इन दो कहानियों से यह सिद्ध होता है कि विवाह की आयु बीत जाने के बाद प्रौढ कुमारिकाओं का विवाह का निर्णय 'चिडिया चुग गई खेत' सा सिद्ध हो जाता है।

उपसंहार

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत शिवानी की कहानियों में नायिकाओं की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करने के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया हूँ कि उनकी कहानियों में चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ जीवन के यथार्थ से पूर्णत: संबंधित है।

अन्य निष्कर्ष इस तरह प्राप्त हुए है ----

(१) शिवानी की कहानियों की नायिकाएँ जीवन के सभी स्तरों से आयी हुई है। अत: विविध स्तरों की नायिकाओं की विविध समस्याओं के दर्शन इनकी कहानियों में हो जाते है।

(२) प्रस्तुत समस्याओं में कुछ समस्याएँ सर्वसाधारण (जनरल) हैं, तो कुछ विशिष्ट (स्पेसिफिक) हैं। पहाडी परिवेश से संबंधित कहानियों में चित्रित नायिकाओं की समस्याएँ विशिष्ट समस्याओंके अन्तर्गत हम रख सकते हैं।

पहाडी प्रदेश में शिक्षा का अभाव,अर्थार्जन के साधनों की कमी, देवी देवताओं पर गहन विश्वास, रूढिवाद तथा परम्परावाद से बध्द समाज में नायिकाओं को जिन जिन समस्याओं का सामना करना पडता है उससे उनके सहनशील एवं त्यागमयी स्वरूप के दर्शन होते हैं।

(३) अन्ध विश्वास का प्रभाव न केवल अशिक्षित नायिकाओं पर दिखाई देता है परंतु शिक्षित नायिकाओं में भी अन्धविश्वास उतना ही दृढ विद्यमान नजर आता है इसका प्रत्यंतर `ज्येष्ठा` कहानी की नायिका `पिटी` तथा `चांद` की `मानवी` द्वारा होता है।

(४) विवाह विषायक विविध समस्याओं का सच्चाई के साथ चित्रण इनकी कहानियों मे विविध नायिकाओं के माध्यम से हुआ है। विशेषात: अनमेल विवाह की समस्याओं का चित्रण अधिक यथार्थ प्रतीत होता है।

(५) विधवाओं की समस्याओं को चित्रित करते समय लेखिकाने ऐसी नायिकाएँ प्रस्तुत की है जो हालात के सामने हार नहीं मानती वरन् परिस्थिति से जूझाती हुई अपराजेय सिद्धध होती हैं।

(६) निर्धनता के कारण निर्माण समस्याओं पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। दहेज देने की असमर्थता के कारण कम उम्र में सुन्दर सुन्दर लडकियों का बूढे और दुहेजू व्यक्तियों के साथ विवाह के कई उदाहरण दिखाई देते हैं।

दहेज की समस्या पर आधारित `श्राप` कहानी की नायिका `दिव्या` को जिंदा डालने की घटना दहेज जैसी भयावह समस्या का यथार्थ चित्रण करने में सक्षम है ।

(७) दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन की समस्याएँ तो हरजगह , हररोज दिखाई देनेवाली समस्याएँ हैं जिन्हें हम सर्वसाधारण समस्याएँ भी कह सकते हैं किन्तु लेखिका ने बन्द घड़ी, छि: मम्मी तुम गंदी हो , ज्यूडिथ से जयन्ती, प्रतीक्षा आदि कहानियों में इन समस्याओं पर समाधान ढूँढ़ती हुई नायिकाओं को प्रस्तुत किया है ।

(८) इसी तरह कुरूपता और सौंदर्य के कारण निर्माण समस्याएँ, प्रौढ़ कुमारिकाओं की समस्याओं पर भी पर्याप्त रोशनी डाली है ।

(९) इन समस्याओं का शिवानी की कहानियों की नायिकाओं पर जो प्रतिक्रिया होती है उससे उन नायिकाओं का स्वरूप स्पष्ट होने में मदद मिलती है ।

••